भाषा की कक्षा में रचनात्मकता
सहज प्रक्रियाओं की ओर

अनिकेत कुमार

बच्चों के साथ भाषा पर काम करते हुए ये बहुत ज़रूरी है कि काम सन्दर्भयुक्त हो, जीवन अनुभवों से जुड़ा हुआ हो, काम में भागीदारी और अभिव्यक्ति के मौक़े हों। कहानियाँ इसके लिए बहुत ही उपयुक्त साधन हैं। कहानी की किताबों पर काम करते हुए पढ़ना-लिखना तो एक आधारभूत काम होता ही है लेकिन उच्च भाषा कौशल जैसे– कल्पना, अनुमान, तर्क, भावनात्मक प्रतिक्रिया और विचारों का आदान-प्रदान भी सध पाते हैं। चित्रों वाली कहानी की किताबों के साथ इसपर और बेहतर काम हो पाता है। प्रस्तुत आलेख में अनिकेत कुमार ने प्राथमिक स्तर के बच्चों के साथ कहानी की किताबों को लेकर किए गए सुनियोजित काम से जुड़े अपने अनुभव विस्तार से लिखे हैं। सं.

बच्चों के साथ किताबों पर कार्य करते हुए आवश्यक है कि बच्चे समझ के साथ पढ़ें। इस समझ में शामिल है कि पढ़े हुए को अपने अनुभव से जोड़कर अभिव्यक्त कर सकें, उसपर सवाल-जवाब कर सकें, क्या अच्छा लगा क्या नहीं बता सकें, आदि। ये प्रक्रियाएँ बच्चों को सोचने, प्रतिक्रिया देने और रचनात्मकता के अवसर भी देती हैं। प्राथमिक कक्षाओं के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफल में यह अपेक्षित है कि भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में बच्चे सुनने, बोलने, पढ़ने, और लिखने के कौशलों को बेहतर कर पाएँ और विभिन्न भाषाई दक्षताओं, मसलन पढ़ी हुई कविता / कहानी को अपने अनुभव से जोड़कर बताना, सोचना, तर्क करना, मौलिक लेखन की प्रक्रिया में शामिल हो पाना, आदि कर पाएँ। शासकीय प्राथमिक शाला में बच्चों और शिक्षक के साथ कार्य करने के दौरान इन प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए कार्य किए गए।

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को भाषा क्यों सिखाई जाए, इस सवाल पर बात करते हुए प्रोफ़ेसर मनोज कुमार कहते हैं कि बच्चे बुनियादी भाषा कौशलों को निखार पाएँ, बेहतर कर पाएँ, साथ ही आगे की कक्षागत प्रक्रिया में सक्रियता से सहभाग कर पाएँ, यह बहुत ज़रूरी है क्योंकि जब तक बच्चे इन बुनियादी कौशलों को हासिल नहीं कर पाते, आगे बढ़ना मुश्किल होगा। वे बताते हैं कि भाषा बच्चों के लिए खिड़की का कार्य करती है, मतलब जब बच्चे पढ़ने-लिखने लगें, उसके बाद आगे की संज्ञानात्मक क्षमताओं पर कार्य किया जाना ज़्यादा बेहतर रहता है। अपनी बात को रख पाना, पढ़ना-लिखना सीखना, सीखने की प्रक्रिया में बच्चे की अधिक और बेहतर सहभागिता को भी सुनिश्चित करता है। यह कह सकते हैं कि यह बच्चे को सीखने में स्वतंत्र बनाने की दिशा में बढ़ाता है।

कक्षा की प्रक्रिया में किताबों के माध्यम से इस तरह के अवसर कैसे बनाए जाएँ ताकि बच्चों को सुनकर समझने, अनुमान लगाने, सवाल बनाने, तर्कों पर बात करने, उन्हें जाँचने, संवाद गढ़ने, कहानी-कविता पर फ़र्क़ तरह से और कुछ नया सोचने के मौक़े मिलें? क्योंकि ये सभी अवसर बच्चों के समझकर पढ़ना-लिखना सीखने में ही नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी मददगार होंगे और शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करेंगे।

इन्हीं बिन्दुओं पर विचार करते हुए मैंने कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों के साथ काम शुरू किया। सबसे पहले मैं समझना चाहता था कि बच्चे क्या-क्या जानते-समझते हैं, ख़ासकर पढ़ने-लिखने और भाषा के अन्य कौशलों के सम्बन्ध में।

इस आकलन के लिए मैंने कहानियों की कुछ किताबें उन्हें पढ़ने के लिए दीं। इसके साथ ही कहानियों पर आधारित लेखन कार्य करवाए, जैसे– कहानी का सारांश लिखना, कहानी में क्या और क्यों अच्छा लगा, कहानी के आधार पर चित्र निर्माण, आदि। इस आकलन से मुझे



बच्चों की वर्तमान स्थिति और ज़रूरत का एक अन्दाज़ा लगा। यह समझ आया कि कक्षा 3, 4 और 5 के उपस्थित 32 बच्चों में से 12 पढ़कर समझ लेते हैं और उसपर बात करते हैं। मैंने शिक्षक से इसपर बातचीत की और उनके साथ मिलकर योजना बनाई गई कि बच्चों के साथ किताबों पर क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं। योजना के कुछ बिन्दु थे : बच्चों को ढेर सारी पुस्तकें पठन हेतु दी जाएँ, बच्चे किताबों को पढ़ने के बाद उनपर अपनी बात रखें, कहानी के आधार पर सोच पाएँ, कहानी के प्रसंग को लेकर तर्क-वितर्क के मौक़े बनें, बच्चे समूह में काम करें, आदि।

कहानी पर बच्चों की अभिव्यक्ति

योजना कुल 16-17 दिनों की थी और पूरी प्रक्रिया कुछ हिस्सों में विभाजित थी। इसमें बच्चों को कहानी की किताबें एकल और समूह में पठन हेतु देना, बच्चों को कहानी बोलकर/पढ़कर सुनाना और उसपर उन्हें सोचने, अनुमान लगाने व उसे समझने के मौक़े देना, इसके बाद कहानी के आधार पर बच्चे कैसे सोचें, इस तरह की गतिविधियों पर काम, जैसे– कहानी के पात्रों के बारे में बताना, कहानी के बाद कहानी को लेकर बात करना, शामिल था। अगले चरण में सोचने, कहानी बनाने, लिखने आदि बिन्दुओं पर कार्य किए गए। उद्देश्य यह था कि बच्चों के साथ चित्र और सन्दर्भ आधारित कहानियों का चयन किया जाए, जिसमें लिखी हुई कहानी का सम्बन्ध चित्रित घटनाओं से हो। और मुख्य रूप से इन्हीं प्रक्रियाओं के माध्यम से बच्चों को नया सोचने के मौक़े दिए जाएँ।

नियोजित प्रक्रिया के अनुसार बच्चों को पठन हेतु कहानियाँ दीं और फिर उन्हें सुनाईं भी। कहानियों को बोलकर / पढ़कर सुनाने के दौरान बच्चों ने अलग-अलग तरह से अनुमान लगाए। जैसे– 'नन्हे चूजे की दोस्त' कहानी के आवरण पृष्ठ के अवलोकन के उपरान्त बच्चों के अलग-अलग अनुमान थे। कुछ बच्चों ने कहा कि लोमड़ी चिड़िया के बच्चे को खा जाएगी, कुछ ने बताया कि खा जाएगी तो कहानी आगे कैसे बढ़ेगी? शायद इन दोनों में दोस्ती हो जाएगी। एक बच्चे ने बताया कि लोमड़ी पहले दोस्ती करेगी उसके बाद चालाकी से उसे खा लेगी। यहाँ बच्चे अनुमान तो लगाते ही हैं, साथ ही तर्कों पर भी बात करते हैं और अपने तर्क शामिल भी करते हैं।

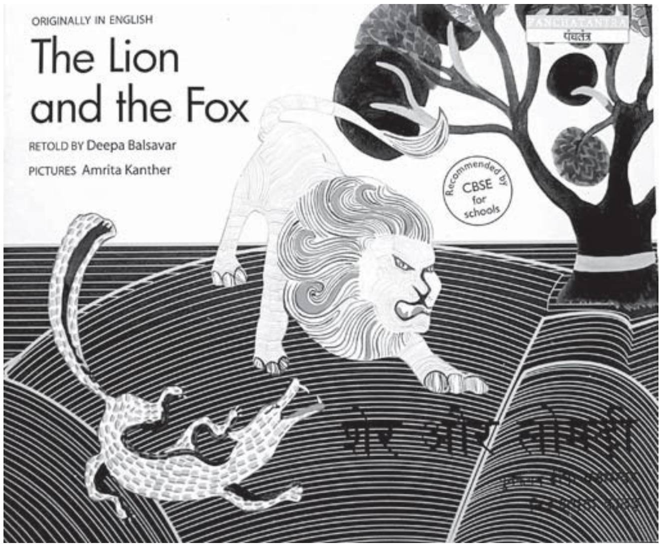
एक और कहानी 'शेर और लोमड़ी' पर काम करते हुए यह समझ आया कि कहानियाँ बच्चों के सोचने के दायरे को आगे कैसे बढ़ाती हैं। इस कहानी में एक जगह शेर और लोमड़ी मिलकर आदमी को बन्धक बना लेते हैं और उसे बाँटकर खाने की बात करते हैं। यहाँ बच्चों से सवाल किया गया कि तुम ऐसी स्थिति में फँसते तो क्या करते!

नीलम : "मैं तो उसे अपनी कुल्हाड़ी से मार देती।"

पुष्पक : “मैं तो डर जाता।”

रोहिणी : “मैं शेर और लोमड़ी से विनती करती कि मुझे जाने दो, मैं तुम्हारे लिए और बढ़िया शिकार ढूँढ़कर लाऊँगी।”

इसपर रामजी ने कहा : “शेर इतना बेवकूफ नहीं है कि वो हाथ आए शिकार को जाने दे!”



नीलम और पुष्पक ने जो जवाब दिया वह एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है कि ऐसी स्थिति में या तो डर जाते या प्रतिकार करते। वहीं रोहिणी कहानी की समस्या पर सोचकर अपने समाधान बताती है कि वह शेर और लोमड़ी से बात करती, और रोहिणी के इस समाधान पर रामजी का तर्क कि शेर इतना बेवकूफ नहीं कि हाथ आए शिकार को जाने दे। यह कहानी वास्तविक जीवन की चुनौतियों से रूबरू कराती है कि समस्याओं के समाधान इतने आसान नहीं होते, हमें मज़बूत कारण ढूँढ़ने होते हैं। कहानी पर होने वाली बच्चों की ऐसी तार्किक बहस का जुड़ाव शिक्षा के उद्देश्यों से होता है कि शिक्षा जीवन की तैयारियों और उसमें आने वाली चुनौतियों के लिए हो, और समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस क़ाबिल हो कि स्वयं के स्तर पर उन चुनौतियों का समाधान खोज पाए।

शेर और लोमड़ी कहानी पर अब तक किए कार्य ने कहानी को और आगे लेकर जाने की सम्भावनाओं को साफ़ कर दिया।

यहाँ एक और बात समझ में आई कि बच्चे कहानी की घटनाओं, कहानी में पात्रों की प्रतिक्रियाओं, समस्याओं आदि के बारे में पूर्वानुमान भी लगाने लगे हैं। लगभग 15 दिनों तक विभिन्न कहानियों के साथ काम करने की प्रक्रिया के दौरान बच्चे कहानी की संरचना को समझने लगे थे। बच्चे भले ही यह न बता पा रहे हों कि कहानी में पात्र होता है, घटनाएँ होती हैं, कुछ समस्याएँ होती हैं और उनका समाधान होता है, पर वे पात्रों को समझने लगे थे, पात्रों की स्थिति के अनुरूप जवाब देने लगे थे और कहानी में आगे क्या होगा, इसका अनुमान इसी समझ के आधार पर लगाने लगे थे। जो उत्तर रामजी ने दिया कि शेर इतना बेवकूफ नहीं है कि इंसान को जाने देगा, उससे यह भी पता चलता है कि कोई कहानी जब शुरू हुई है और उसमें कुछ समस्या है तो उसका समाधान एकदम से नहीं मिलेगा, क्योंकि इस तरह तो कहानी बनेगी ही नहीं।

कहानी से संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास

अगले चरण में हमने समूहों में कहानियों को पढ़ा, उनपर समूह में ही बातचीत की, प्रश्न बनाए, उत्तर ढूँढ़े, इसके बाद आगे की प्रक्रियाओं पर कार्य किए। यहाँ कार्य करते हुए उद्देश्य यह था कि बच्चे समूह में कहानी पढ़ें, उसपर और कहानी के किसी पात्र को लेकर बातचीत करें / बताएँ, कहानी को आगे लेकर जाने सम्बन्धी बिन्दुओं पर बातचीत करें / सोचें, कहानी के बारे में ख़ुद लिखें।

यहाँ बच्चों को *बरखा* सीरीज़ की स्तर एक और दो की पुस्तकें पठन हेतु दीं। बच्चों ने

कहानियों को पढ़ा और नीचे दिए बिन्दुओं के आधार पर कहानी को लेकर कार्य किया :

बच्चों ने जो किया	भाषाई दक्षताओं की प्राप्ति
कहानी में कौन-कौन है, कहानी में क्या हो रहा है?	तथ्यों को बताना
कहानी के बारे में बताना।	सारांश / भाषा का इस्तेमाल
कहानी में क्या अच्छा लगा और क्यों?	सोच पाना
कहानी पर कुछ सवाल बनाओ।	सोच पाना
कहानी के बाद क्या हुआ होगा?	कल्पना करना, अनुमान लगाना

कहानी के बारे में बताते हुए बच्चों को शुरुआत में एक से ज़्यादा घटनाओं वाली कहानियों के सारांश बताते हुए चुनौती महसूस हुई। मसलन 'तालाब के मज़े' कहानी की घटनाओं को रोहिणी अपने शब्दों में बता रही थी, लेकिन वो बीच-बीच में कई दफ़ा रुकी, सोचने के लिए समय लिया, और घटनाओं को क्रमवार रखने में भी उसे कठिनाई हुई। स्तर दो की पुस्तकों में एक से ज़्यादा घटनाएँ हैं अतः उन्हें इसे बताने में सोचना पड़ा। मैंने पूरक सवाल भी पूछे कि बगुले ने अपने बच्चे को खाना कैसे खिलाया। पूरक सवाल के बाद रोहिणी ने बताया कि बगुले ने अपने बच्चों को मछली पकड़ना कैसे सिखाया, ताकि उन्हें आगे बढ़ने में मदद मिले।



अगले समूह को 'गिल्ली-डण्डा' कहानी पढ़नी थी। बच्चों ने कहानी के पात्रों और कहानी को अपने शब्दों में बताया कि बबली गिल्ली लाने और खेल शुरू करने में सबकी मदद करती है। यहाँ एक बात समझ में आई कि चूँकि बच्चों के साथ कहानी पर कार्य करते हुए यह पहला मौक़ा है जब उन्हें कहानी पर बात करने, उसके बारे में बताने, अपनी बात कहने और सवाल बनाने के मौक़े दिए जा रहे हैं, अतः स्तर एक की पुस्तकें इन बच्चों के लिए ज़्यादा उपयुक्त थीं।

आगे बढ़ते हुए जब बच्चों से पूछा कि कहानी में क्या अच्छा लगा। एक बच्चे ने कहा कि बबली अच्छी लगी क्योंकि वह दूसरों की मदद करती है। एक अन्य बच्चे ने बताया कि उसे कहानी के बच्चे पसन्द आए क्योंकि वे खेल रहे हैं। बच्चों से कहानी पर सवाल बनाने को कहा। बच्चों के सवाल थे : गिल्ली को किसने उछाला, सब लोग किसे पकड़ने दौड़ रहे थे, गिल्ली-डण्डा कौन-कौन खेल रहा था, गिल्ली कहाँ चली गई, आदि।

यहाँ बच्चे ऐसे सवाल बना रहे थे जिनका जवाब एक शब्द में हो सकता था। गिल्ली-डण्डा कौन-कौन खेल रहा था? इस सवाल में ज़रूर कुछ विवरणात्मक जवाब की अपेक्षा थी। यहाँ समझ आया कि बच्चों के साथ प्रश्न बनाने पर भी और कार्य किया जा सकता है। कहानी का सारांश बताने में बच्चों को भाषाई चुनौती आई और एक से ज़्यादा घटनाओं का होना भी उनके लिए दिक़्क़तों-भरा था। एक और समझ बनी कि जब बच्चे कहानी पर अपने अनुभवों को जोड़कर बताते हैं तब वे अधिकतर उनके पसन्द की चीज़ें होती हैं। मसलन, बच्चों ने बताया कि उन्हें खेल के दौरान एक दूसरे की मदद करना अच्छा

लगा। अब यहाँ ग़ौर करें तो बच्चों के अपने जीवन में भी जब वे किसी समस्या में होते हैं और कोई उनकी मदद करे तो उन्हें बहुत अच्छा लगता है। बच्चे कहानी के पात्रों को अपने अनुभव से जोड़कर देखते हैं। यह भी कि एक सुगमकर्ता के तौर पर पूरी प्रक्रिया में धैर्य का होना आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक बच्चा अपना समय लेता है।

प्रो. कृष्ण कुमार ने अपनी पुस्तक *बच्चे की भाषा और अध्यापक* में कहा है, "अध्यापक की हैसियत से हमें बच्चों को लेखन से परिचय बातचीत के एक रूप में देना चाहिए"। जैसे किसी कहानी पर चर्चा करने के बाद उससे कोई नई कहानी बनाने के सुराग़ मिल सकते हैं या फिर कक्षा के बच्चों के किसी विषय या घटना से जुड़े अनुभवों को सुनने के बाद बच्चों को उन्हें लिखने को कहा जा सकता है। बातचीत करने से लेखन के लिए भी ख़ाका मिल जाता है कि क्या-क्या हुआ, क्या-क्या हो सकता है, या फिर क्या-क्या देखा, आदि। किसी चित्र पर बातचीत करके उसके बारे में अपने विचार लिखे जा सकते हैं। किसी मुद्दे पर दूसरों के विचार सुनने और बातचीत करने से नए विचार बनते हैं। कहानी पर कार्य करते हुए दो चरणों में बच्चों को भाषाई अभिव्यक्ति और सोचने, विचारने एवं प्रतिक्रिया देने के अवसर मिले। यह एक तरह का आधार था जहाँ से बच्चों के साथ रचनात्मक अभिव्यक्ति पर कार्य किए जा सकते थे।

कहानी और रचनात्मक अभिव्यक्ति की शुरुआत

अगले चरण में बच्चों को *बरखा* सीरीज़ के पहले स्तर की पुस्तक *छुपन-छुपाई* और *मीठे-मीठे गुलगुले* पढ़ने को दी गई। इन कहानियों में केवल चित्र थे (क्रमिक) लिखित टैक्स्ट को हटा दिया गया था (सॉफ़्ट कॉपी से हटाकर सिर्फ़ चित्रों के प्रिंट लिए थे)। उद्देश्य यह था कि बच्चे समूह में चित्र कथा को देखें, उसपर बात करें और मौलिक कहानी बनाएँ। यहाँ बच्चों से



बात की गई कि उन्हें चित्रों को देखना है, चित्र में घटित कहानी को समझना है और बात करनी है। जो समझ में आए उसके आधार पर पहले समूह में बात करनी है कि चित्रों में क्या हो रहा है और उसके बाद जो उन चित्रों में हो रहा है उसे लिखना भी है।

बच्चों ने चित्रकथा का अवलोकन किया और उसके आधार पर समूह में बात भी की, पर बच्चे निर्देशों को अच्छी तरह नहीं समझ पाए कि आगे किस तरह से कार्य किए जाएँ। फिर से निर्देश दिए गए, साथ-साथ चित्र दिखाते हुए कुछ सवाल पूछे। जैसे–

चित्र में क्या हो रहा है? बच्चों ने बताया कि दो लड़कियाँ हैं। कुछ बच्चों ने पहले यह कहानी पढ़ी थी अतः उन्होंने बताया कि ये रमा और रानी हैं। इस तरह चित्रों को दिखाते हुए मैंने उनसे पूछा कि चित्र में क्या हो रहा है और बच्चे बताते गए। अब यह बात बच्चों को समझ में आई कि चित्र में कुछ दिख रहा है और अलग-अलग चित्रों में कुछ हो रहा है जिससे कहानी आगे बढ़ रही है।

बच्चों ने काम शुरू किया। वे कहानी के चित्रों को देखकर अपनी बात बता रहे थे लेकिन कुछ पक्का नहीं कर पा रहे थे कि आगे कैसे बढ़ें। मैंने उनसे बातचीत की और पूछा कि इनका क्या नाम होगा। कई सुझाव आए, और अन्ततः लड़की का नाम राधिका और लड़के का



नाम गोलू रखा। मैंने चित्र दिखाते हुए पूछा कि क्या हो रहा है। बच्चों ने कहा कि सब 'दुक-दुकाई' खेल रहे हैं। और वे कहानी के बारे में बताते गए।

मैंने पाया कि चित्र के बारे में बताने के लिए कई तरह के वाक्य आते हैं। जैसे– रामजी ने कहा कि सब मिलकर खेलने की सोच रहे हैं।

नीलम ने बताया कि वे सब दुक-दुकाई खेलने के लिए बातें कर रहे हैं और दाम गया है लकी पर।

ख़ैर, जो कहानी बनी उसे सुना गया और मुझे लगा कि बच्चे अब यहाँ से कहानी को पूरा कर लेंगे। मैंने उन्हें कहा कि अब इसी तरह कहानी को लिखना है और जो बताया है उसे ही लिखना है।

अब दूसरी कहानी 'मीठे-मीठे गुलगुले' में भी बच्चों के साथ इसी तरह से बात की।

बच्चों को मिले रचनात्मक अभिव्यक्ति के मौक़े

कहानी शिक्षण की इस प्रक्रिया में बच्चों ने कहानी को समझकर पढ़ने के बाद उससे सम्बन्धित अपने अनुभव, प्रतिक्रिया आदि साझा की। साथ ही बच्चों ने अपनी भाषा को भी शामिल किया। जैसे– चित्रकथा में एक नई मौलिक कहानी का निर्माण करते हुए बच्चे एक ही स्थिति के लिए अलग-अलग वाक्यों का इस्तेमाल कर रहे थे और इस तरह उन्होंने पूरी कहानी भी बनाई। पारुल बत्रा अपने लेख में बताती हैं कि "बच्चे जिस तरह के वाक्य बोलते हैं और जिन शब्दों से दैनिक जीवन में परिचित भी हैं, लेखन की बात आते ही उन्हें दरकिनार कर दिया जाता है। बच्चों को किसी विषय पर अपने विचार बनाने, कहने या लिखने की कोई जगह भाषा शिक्षण की इस विधि में नहीं होती है। लेकिन असल में हम तो पढ़ना-लिखना सीखते ही इसलिए हैं ताकि अपनी बात को व्यवस्थित व सुसंगत ढंग से मौखिक और लिखित रूप में अभिव्यक्त कर लोगों तक पहुँचा सकें।"

उपसंहार

सृजनात्मक भाषाई प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों के साथ इस तरह के मौक़े बनाए जाएँ। जब बच्चे समूह में या व्यक्तिगत



रूप से सोचें तब उत्तर / समाधान न बताते हुए उनकी सही दिशा में सोचने में मदद की जाए। जैसे– चित्रकथा के अवलोकन उपरान्त जो कहानी में हो रहा है उसके बारे में क्या लिखा जाए, कैसे लिखा जाए, बच्चों ने ही तय किया। इसी तरह बच्चे जब कहानी की घटनाओं पर तर्क-वितर्क कर रहे हों, असहमत हों, तब इस चर्चा को बग़ैर किसी बाहरी दबाव के तय होने देना। जैसे– 'मीठे-मीठे गुलगुले' कहानी पर कार्य करते हुए बच्चों के बीच तार्किक बहस हुई कि गीले आटे से क्या बना होगा और अनुज ने बताया कि आटे में चीनी मिलाकर मिठाई बनेगी। इसपर पुष्पक ने अपने अनुभव से बताया कि आटे से मिठाई नहीं बनती, उसमें तो दूध और मावा लगते हैं। अंशिका ने कहा कि यह मैदा है और इससे लड्डू बनेंगे। इसपर हर्ष ने कहा कि उसकी माँ मैदा की रोटी क्यों बनाती है?

यहाँ यह समझ में आया कि तार्किक प्रक्रिया में चीज़ें ठीक तरह से आगे बढ़ रही थीं, इसके लिए ज़रूरी था कि प्रत्येक बच्चे को उसका अवलोकन और तर्क रखने के मौक़े दिए जाएँ। बच्चे अपना अवलोकन कर रहे थे और एक दूसरे के अवलोकनों को अपने तर्क के माध्यम से काट भी रहे थे, इस तरह यह कार्य आगे बढ़ रहा था।

कहानियों को पढ़ते, सुनते और समझते हुए बच्चे कहानी की संरचनाओं को भी समझने लगे थे। क्योंकि जिस तरह बच्चों के जवाब आ रहे थे उससे लग रहा था कि वे यह समझने लगे हैं कि कहानी में समस्या होती है, कुछ पात्र होते हैं, पात्रों के बीच किसी समस्या को लेकर बातचीत होती है और उसके समाधान की बात होती है। बच्चों ने जिस तरह कहानी के आधार पर अनुमान लगाए, समाधान आदि खोजे, उससे यह समझ में आने लगा था कि कहानी की संरचनाओं को लेकर बच्चों की समझ बनने लगी है।

अब तक इस पूरी प्रक्रिया में यह लग रहा है कि बच्चों को कहानी बनाने, भाषा का इस्तेमाल करने, सोचने के अवसर बनाने हेतु उनके साथ पहले की बातचीत ज़रूरी है। दूसरा कि कहानी बनाने की प्रक्रिया में उनकी बातों को ध्यान से सुनना और जहाँ उन्हें मदद की आवश्यकता है उन्हें सोचने हेतु ऐसे सवाल और बातों पर सोचने में उनकी मदद करना। कहानी पर जब बच्चे काम करने की शुरुआत कर रहे थे तब उन्हें किस तरह से कहानी का अवलोकन करना है, कहानी में क्या हो रहा है उसपर समूह में बात करनी है, कहानी किसके बारे में है, कौन क्या कर रहा है, इन सबपर सोचना पड़ता है, और समूह के सभी बच्चे इसपर सोचते हुए इसका हल निकालते हैं। इस तरह कई जगहों पर बच्चों के अनुमान लगाने, सोचने, और अपने तर्कों को रखने में भाषा का इस्तेमाल करने के मौक़े मिलते हैं।

सन्दर्भ

1. 'लिखना' प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ कुछ अनुभव : पारुल बत्रा दुग्गल
2. प्रो. कृष्ण कुमार, *बच्चे की भाषा और अध्यापक, एक निर्देशिका*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
3. 'भाषा शिक्षण के व्यापक उद्देश्य' विषय पर सागर विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर मनोज कुमार का व्याख्यान।

अनिकेत कुमार ने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरू से शिक्षा में स्नातकोत्तर किया है। वे आठ वर्षों से आरम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। तक़रीबन छह वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, सागर, म.प्र. में भाषा के रिसोर्स पर्सन के रूप में काम कर रहे हैं। आपने इससे पहले तीन वर्षों तक आगा खान ग्राम समर्थन कार्यक्रम में रिसोर्स पर्सन के रूप में काम किया है। अनिकेत को शैक्षणिक और सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने में गहरी रुचि है।

सम्पर्क : aniket.kumar@azimpremjifoundation.org